वाजपेयी, जोशी और गोविन्दाचार्य के बीच टकराव वि

सच्चाई बयान करते उनकी ही हस्तलिपि में लिखे नोट्स

गोविन्दाचार्य के स्वनिर्धारित कार्य–गुप्तचरी, अन्य संगठनों व प्रेस से सम्पर्क, संघ से समन्वय

गोविन्दाचार्य

अटल बिहारी वाजपेयी

मुरली मनोहर जोशी

...व विस्फोटक स्थिति में

आडवाणी को छोड़ सबके विरुद्ध अभियान

...की गई खोजबीन के दौरान ...दाचार्य द्वारा संघ नेताओं के ...लिए तैयार किये गये निजी ...लगे हुए नोट्स के अंश मिल ...अपनी हस्तलिखित टिप्पणियों ... गोविंदाचार्य गलत बताना

...इस बात की पुष्टि करते है कि ...पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में पिछले ...र्षों से टकराव बढ़ता गया है। श्री ...आडवाणी के अध्यक्ष पद से हटने ...ली मनोहर जोशी के अध्यक्ष पद ...श्री गोविंदाचार्य व्यथित होकर

...र्य के हस्तलिखित नोट्स ...स्तुत विवरण पृष्ठ ७ पर

...से संघ नेताओं के समक्ष शिकायत ...करते रहे। आडवाणी जी के अध्यक्ष ...श्री गोविंदाचार्य को विशेष महत्व ...कन अब भी वह अटलजी, जोशीजी, ...और आंधनीजी को किसी भी कीमत ...नहीं आने देने का अभियान छेड़े हुए ...में पत्रकारों के साथ बातचीत में ...का नाम लिये बिना यह तक कहते ...कि 'उदारवादी या बड़ी-बड़ी बातें ...पार्टी छोड़ भी दें, तो कुछ फर्क नहीं ...है। असली काडर हमारे साथ है।' ...चुनाव हो या पार्टी के सांसदों का ...कार्यक्रम, गोविन्दाचार्य किसी भी ...पर अपना दबदबा रखना चाहते है। इसी ...उ.प्र., म.प्र., बिहार, दिल्ली जैसे राज्यों में

संगठन चुनाव को लेकर आग धधक रही है। अनुशासन के नाम पर इस आग को कब तक और कितना दबा कर रखा जा सकता है? यों स्वयं श्री गोविंदाचार्य अपने नेताओं पर

जे. के. जैन की टिप्पणी का क्या? ज्ञानेन्द्र द्विवेदी का क्या हुआ? प्रेस में उनके व्यवहार, उनका रहन-सहन, व्यय, घर में सुजुकी का इंजिन, लखनऊ में प्रभुजी और उनकी पत्नी से

अन्दर ही अन्दर उबलते रहे है। डा. जोशी के सन्दर्भ में अपनी एक टिप्पणी में गोविन्दाचार्य ने लिखा है— महिलाओं से दुष्कर बर्ताव करते है,

व्यवहार, प्रभात जोशी से एकता-यात्रा में दुर्व्यवहार, हुए निर्णय से अलग उधर में

(शेष पृष्ठ ११ कालम ३ पर)

गोविन्दाचार्य

(पृष्ठ एक का शेष)

भाषण का, उनका साथियों और पत्रकारों के बीच वाली असंयम, इन सबके बाद हुई पार्टी की हानि के बारे में क्या? उनका केन्द्र दिल्ली में क्यों? इनके द्वारा हो रहे नुकसान के बारे में सामूहिक बैठ कर विचार क्यों नहीं हुआ?

श्री गोविंदाचार्य संघ के वरिष्ठ नेता आरेजी, गोपालजी की देख-रेख की जिम्मेदारी स्वीकारने के साथ साध्वी सुश्री उमा भारती को संभालने तथा उनके दर्द की बातें भी लिख कर रखे रहते है। एक जगह उन्होंने लिखा है— 'उमा भारती फरवरी से अप्रैल १९९१ में पार्टी छोड़ रही थीं। ११ जून में संसदीय पार्टी बनने के बाद पार्टी छोड़ने लगी, सितम्बर अंत में दिल्ली में पत्रकार-वार्ता करने लगी थी, बाद में पार्टी नहीं छोड़ेंगी। अगर इज्जत से नहीं जी पा रही, इसलिए वे फरवरी में आत्महत्या करने लगी, इस सबमें उन्हें रोकने वाला, बचाने वाला कौन? अन्दो से परिचय कराने के बाद किसी ने भी क्यों नहीं संभाला?'

ऐसी अनेकानेक टिप्पणियां भले ही निजी उपयोग के लिए लिखी गई हों, लेकिन क्या यह साबित नहीं करतीं कि भाजपा में तनाव, टकराव और संघर्ष की गहु-मडु बहुत गहरी है। इसे क्या चिकनी-चुपड़ी बातों में छिपाया जा सकता है? असली सवाल संगठन और राष्ट्र का नहीं, वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओं और सत्ता पर कब्जे का है। इसीलिए हम श्री गोविन्दाचार्य की मन:स्थिति को दर्शाने वाले नोट्स के प्रमुख अंश हूबहू प्रकाशित कर रहे हैं।